29

लोग, फंदे और नियम

(3:1-14)

हमने देखा है कि इब्रानियों की पुस्तक का ''आरम्भ एक संधि की तरह होता है, प्रवचन की तरह जारी रहती है और पत्र की तरह समाप्त होती है।''[1] नील आर. लाइटफुट ने अध्याय 13 को पूरी पुस्तक का ''विस्तृत पश्च-लेख''[2] कहा है। इसमें हमें तेज़ क्रम में दिए संक्षिप्त अन्तिम निर्देशों की एक शृखंला मिलती है। इस पाठ में हम अध्याय के पहले भाग को और अन्तिम पाठ में दूसरे भाग को पूरा करेंगे।

सहायता के लिए लोग (13:1-3)

(1) *भाइयों[3] को प्रेम की आवश्यकता है* (आयत 1)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने पहले पवित्र लोगों के लिए अपने प्रेम के लिए पाठकों को सराहा था (6:10)। अब उसने उन्हें उसी प्रेम में *बने रहने* का आग्रह किया (देखें 1 पतरस 4:8; 2 यूहन्ना 5)।

(2) *अजनबियों को अतिथि सत्कार की आवश्यकता है* (आयत 2)। संदर्भ में ''अजनबी'' सम्भवतया उन मसीही लोगों को कहा गया, जिनसे वे पहले नहीं मिले। अतिथि सत्कार मसीही गतिविधि का मुख्य भाग है (रोमियों 12:13; 1 पतरस 4:9)। उस ज़माने में अतिथि सत्कार एक व्यावहारिक आवश्यकता थी जिसमें सरायों में रहना पसन्द नहीं किया जाता था और अधिकतर मसीही लोग निर्धन होते थे। वचन पाठ इस बात पर ज़ोर देता है कि अतिथि सत्कार करने वाले होना कई अप्रत्याशित आशिषें दिला सकता है।

(3) *दुखियों को सहानुभूति की आवश्यकता है* (आयत 3)। मसीही लोगों को अपने विश्वास के कारण जेलों में डाला जाता था और कई और तरीके से दुख मिलता था। कालांतर में पाठकों ने कैदियों के साथ सहानुभूति दिखाई (10:34)। अब उन्हें दुखियों के साथ दुखी होने के लिए अपने आपको देना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सच्ची सहानुभूति व्यवहार में ही दिखाई जाती है (मत्ती 25:36; देखें याकूब 2:15, 16)।

फंदों से बचना (13:4-6)[4]

(1) *परस्त्रीगामिता पर विचार* (आयत 4)। ''व्यभिचार'' विवाहित व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक पाप को कहा गया है। ''परस्त्रीगामिता'' इस आयत में किसी भी अन्य प्रकार के शारीरिक पाप की बात है (उदाहरण के लिए, दो लोगों के बीच शारीरिक सम्बन्ध जिनका वचन के अनुसार आपस में विवाह नहीं हुआ)। विवाह में सैक्स को ''आदर की बात'' (KJV) और ''निष्कलंक'' होना कहा गया है। इसका आवश्यक निष्कर्ष यही है कि विवाह से बाहर यह अपमान की बात और कलंक है। यह निर्देश विशेषकर उस समय आवश्यक था जब

नैतिक स्तर बहुत नीचे थे और मूर्तियों के देवताओं की ''पूजा'' में सैक्स की गतिविधि मिल चुकी थी। इस ताड़ना की आज भी बहुत ही आवश्यकता है।

(2) *लोभ और असन्तोष* (आयतें 5, 6)। मसीही लोगों से लोभी न बनने बल्कि सन्तुष्ट होने का आग्रह किया गया है। परमेश्वर ने हमारे साथ होने की प्रतिज्ञा की है। उसके हमारी ओर होने के कारण हमें किसी बात का भय नहीं होना चाहिए। यह शिक्षा विशेषकर उन मूल पाठकों के लिए विशेष महत्व रखती थी जिनका अपने प्राणों सहित सब कुछ छिन सकता है, यदि वे मसीह के विश्वासी बने रहते। यह सच्चाई हम में से उन लोगों के लिए जिनमें वे भी हैं जिनके पास बहुत है पर वे अभी भी सन्तुष्ट नहीं हैं, विशेष महत्व की है।

ध्यान दिए जाने के लिए नियम (13:7-14)

(1) *विश्वासयोग्य सिखाने वालों की नकल करो* (आयत 7)। इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों को उन्हें याद रखने के लिए कहा गया था जिन्होंने उन्हें मूल में वचन सिखाया था (देखें 2:1-4) और उनके भक्तिपूर्ण जीवनों की नकल करने को कहा गया। बड़े उदाहरणों से पता चलता है कि सम्भव क्या है। यह मसीही लोग विश्वासयोग्य बन *सकते* थे। उनके पहले गए लोगों के उदाहरणों से यह साबित होता था कि वे भी वैसे कर सकते थे।

(2) *गलत शिक्षा से भरमाए न जाओ* (आयतें 8, 9)। अपने पूर्व अगुओं की ओर से उन्हें दी गई शिक्षा बदली नहीं थी, क्योंकि जिसने उन्हें यह शिक्षा दी थी अर्थात यीशु, वह नहीं बदला (आयत 8)। यह बात सही थी इस कारण उन्हें ''नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से'' भरमाए जाकर उस शिक्षा को छोड़ना नहीं चाहिए था (आयत 9क)। मूल पाठकों को सम्भवतया यह पता था कि ''नाना प्रकार की शिक्षाएं'' क्या थीं। ''खाने'' का नाम आता है इसलिए हो सकता है कि यह शिक्षा पुराने नियम के खाने पीने के नियमों से सम्बन्धित हों। ''नाना प्रकार की शिक्षाएं'' चाहे जो भी हों वे इन भाइयों में फैल रही होंगी, यानी उन गलत शिक्षाओं से उन्हें आशीष नहीं मिल सकती थी। केवल नई वाचा के अनुग्रह से ही तब और अब आशिषें मिल सकती हैं।

आयत 8 आज विशेष रूप से महत्व रखती है। ''वह विश्वास जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3) आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यीशु हमारा बड़ा समकालीन पुरुष है। *आज भी* हमें अपने जीवित महायाजक की ओर से सहायता मिलती है। *आज भी* हमें ''नाना प्रकार के उपदेशों'' से भटकना नहीं है, चाहे कितने भी आकर्षित क्यों न लगते हों।

(3) *यीशु के पीछे चलें* (आयतें 10-14)। इस भाग की अन्तिम पांच आयतों में यहूदी धर्म को मसीहियत से अलग करने के लिए पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है।

एक वेदी। मसीही लोगों की ''एक वेदी'' (बलिदान) है जो कि पुरानी वाचा के अधीन रहने वालों के पास नहीं थी (आयत 10)। वह वेदी/बलिदान यीशु का क्रूस है, जिसके ऊपर उसका लहू बहा था।

एक छावनी। यीशु का बलिदान ''छावनी के बाहर'' किया गया था (आयतें 11, 13; देखें आयत 12)। इस्राएलियों के जंगल में घूमने के समय, ''छावनी'' ही थी जहां वे अपने तम्बू लगाकर रहते थे। बलिदान ''छावनी के बाहर'' किया जाता था इस कारण लोगों के लिए ''छावनी

के बाहर [यीशु] के साथ निकलना'' (आयत 13ख) आवश्यक था। ''छावनी'' को छोड़ने का अर्थ यहूदी व्यवस्था को छोड़ना था। यहूदी मसीही लोगों को यहूदी धर्म से हर प्रकार के सम्बन्ध तोड़ने के लिए ताड़ना दी जा रही थी। उन्हें दुख सहने को तैयार होकर (आयत 13क)। और उनकी राह देख रहे ''स्वर्गीय नगर'' के कारण इसे सबसे कीमती मानते हुए यीशु के पीछे चलने की आवश्यकता थी (आयत 14)।

''एक नगर'' हमारे वचन पाठ इस बात पर ज़ोर देते हुए खत्म होता है कि हम मुसाफिर हैं (13:14; देखें 11:8-16)। मेरे गुरु नील लाइटफुट अपनी क्लास में आग्रह करते थे, ''आयत 14 को याद कर लें।'' चाहो तो इसे अपनी दीवार पर लिख लें। उनका कहना था, ''यदि हम सचमुच में इस आयत पर विश्वास कर लें तो कितना बड़ा फर्क आ जाएगा! यह हमारे लिए चीज़ों को सही परिप्रेक्ष्य में रख देगा। बहुत कुछ जिसकी हमें चिन्ता होती है और बहुत बातें जो हमें चिड़ाती हैं उन्हें तुच्छ माना जाएगा।'' फिर उसने कहा, ''यह आयत कहती है, 'हम उस नगर की *तलाश* में हैं जो आने वाला है।' आप और में किसकी तलाश में हैं?''

टिप्पणियां

[1]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 43. [2]वही, 245. [3]सामान्य की भांति, ''भाइयों'' शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में पुरुष और स्त्री दोनों मसीही लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। [4]इस मुख्य शीर्षक को नाम देने का एक और ढंग ''रुकावट डालने वाले फंदे'' होगा। [5]नील आर. लाइटफुट, 26 अक्टूबर 1985 को फोर्ट वर्थ, टैक्सस, में इब्रानियों पर एसीयू की एक्सटेंशन क्लास।